IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

IJARSCT
Impact Factor: 6.252

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Volume 2, Issue 3, November 2022

प्रभा खेतान के आत्मकथा में जीव–दर्शन के विविध सदंर्भ

रीना सिंह[1] and डॉ. राघवेन्द्र तिवारी[2]

शोधार्थी हिन्दी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[1]

प्राध्यापक विभागाध्यक्ष–हिन्दी, श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, रीवा (म.प्र.)[2]

सारांशः प्रस्तुत अध्ययन में प्रसिद्ध व्यापारी समाजसेविका, साहित्य की गहरी समझ रखने वाली प्रभा खेतान के जीवन में आने वाले उतार–चढ़ाव, उच्च आकांक्षाओं की प्राप्ति हेतु किया जाने वाला संघर्ष, अपने ही घर की चौहद्दी के भीतर शोषित होने के बाद भी स्वयं को समाज में स्वतंत्र इकाई के रूप में स्थापित करने का सफर वर्णित है।

मुख्य शब्दः नारी संघर्ष, दृढ़ इच्छा, जर्जर, आत्म चिंतन, श्रृंखला, रचनाधर्मी, उत्तरार्द्ध, संवेदनशीलता, रेखांकित।

प्रस्तावनाः

सृजन, रचनाकार का अनुभूतिपरक जीवन दर्शन होता है जो शब्द रूप लेकर पुस्तककार हो जनमानस के आत्मचिंतन का आधार बनता है। अनुभूतियों का यह जंजाल समय–समय पर चर्चा और चिंतन के नवीन मार्ग प्रशस्त कर युग प्रेरक बनता है। जिसका कायिक स्वरूप भिन्न–भिन्न प्रकार का होता है। कभी गीत के रूप में, तो कभी कथा के रूप में तो भी आत्मकथा के रूप में। कथा और आत्मकथा जब रूपांकर होते हैं तो आत्मकथा का रूपण होता है। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में मनीषियों ने अपने अनुभवों को डायरियों से मुक्त कर पुस्तककार किया जिससे आत्मकथा की प्रवाह मान श्रृंखला प्रस्तुत हुई। इस श्रृंखला में पुरुष और महिला दोनों प्रकार के रचनाधर्मी सामने आयें। महिला आत्मकथाकारों की श्रृंखला में हिन्दी साहित्य में प्रभा खेतान का योगदान अत्यन्त सराहनीय रहा है। प्रभा जी का साहित्य बहु आयामी है उन्होंने अपनी सहज जीवन शैली में हनारी के विविध रूपों के साथ नारी विमर्श को भी बहुत ही प्रभावी सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने ने आधुनिक 'नारी संघर्ष' को अपने साहित्य लेखन का विषय बनाया है। नारी जो स्वतत्रंता की प्रबल समर्थक रही है। उनकी दृढ़ इच्छा रही है कि ''आधुनिक नारी समाज की जर्जर और रूढ़ी मान्यताओं को तोड़कर आत्म सम्मान युक्त जीवन व्यतीत करें।''

प्रभा जी का समग्र साहित्य उनके अपने अनुभव की उपज है उन्होंने जो कुछ अपने जीवन में देखा, जिया और अनुभव किया उसे ही अपने साहित्य का स्रोत बनाया, उनके जीवन की गहरी, सूक्ष्म और कलात्मक अभिव्यक्ति ही उनका साहित्य है। प्रभा जी ने आत्मकथा ही उनका साहित्य है प्रभा जी ने आत्मकथा के

DOI: 10.48175/IJARSCT-6570

अलावा उपन्यास, कविता चिंतन, अनुवाद के साथ संपादन का लेखन भी किया है परंतु उनकी सभी कृतियों में जीवन में बीतने वाली सभी घटनाओं के दृश्य कहीं न कहीं दिखाई दे ही जाते हैं। इसीलिए तो वो कहती हैं–

''मेरी कविताएँ भीतर की तड़प लिए मेरी जुबान है।''

कविता से प्रारम्भ हुई प्रभा खेतान की सृजन यात्रा उपन्यासों से आगे बढ़कर आत्मकथा और चिंतनजनित सृजन में परिवर्तित हुई। उनकी आत्मकथा प्रारम्भ में क्रमिक अर्थों में हंस पत्रिका में प्रकाशित हुई बाद में समग्र पुस्तक 'अन्या से अनन्या' प्रभा जी की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या मैं स्त्री की असुरक्षा एवं जीवन के विविध सोपानों एवं अत्यंत ही संवेदनशीलता एवं गहराई के साथ उठाया गया है। जिसमें जीवन और समय के सच को यथार्थ दृष्टि से रेखांकित किया गया है।

समाज की बड़ी ही अनोखी विडंबना है, एक तरफ तो लोग कहते हैं कि वो स्त्री के दर्द को समझते हैं और दूसरी तरफ प्रकृति के द्वारा बनाए नियमों पर भी स्त्री को ही दोष देते हैं जबकि किसी की उम्र, लम्बाई, चलना–फिरता, बोलना, शारारिक बनावट आदि प्राकृतिक बदलाव के लिए भी सदैव अपनी ही माँ से ताने सुनने पड़ते थें। माता–पिता एवं पाँच भाई–बहनों के होते हुए भी वो सदैव अकेली ही रहती थी। अगर कोई उनका अपन था तो एकमात्र दाई माँ जो प्रभा को प्यार–दुलार देती उनका ख्याल रखतीं, उन्हें, घर, परिवार और समाज सभी से बचाने का प्रयास करती। प्रभा के लिए सदैव खड़ी होने वाली मात्र दाई माँ ही थी। उनके अलावा अगर प्रभा से कोई प्यार करता था तो वो थे प्रभा के पिता, परंतु जब प्रभा नौ वर्ष की थी तभी उनका स्वर्गवास हो गया। तभी से प्रभा के लिए अगर कोई था तो मात्र दाई माँ ही थीं। अपने ही घर में माता के द्वारा तिरस्कार, भाई–बहनों के द्वारा बहिस्कार, अपने ही भाई द्वारा शोषण आदि झेलकर प्रभा बड़ी हुई। परंतु अपने जीवन की समस्याओं को प्रभा ने कभी स्वयं पर प्रभावी नहीं होने दिया और एकांत में रहकर भी उन्होंने मनन और चिंतन करना सीखा तथा अपने भावों एवं विचारों को शब्द रूपी माला में पिरोकर कविताओं में रूपांतरित किया और जब वो सातवीं कक्षा में भी तभी उनकी पहली रचना 'सुप्रभात' पत्रिका में प्रकाशित हुई जिसने उन्हें लेखन की तरफ आकर्षित किया।

नया सृजन नया प्रतिमान लेकर आता है प्रभा खेतान ने भी नव संस्कृति को अनुभूतियों के साथ जोड़ते हुए सृजन की इकाई बनाया। वे स्वच्छन्द विचारों वाली स्वतंत्र महिला रही हैं। अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भी आधुनिक दौर के साथ कदम मिलाकर चलना पसंद करती हैं। समय–समय पर उनके जीवन में कई प्रतिकूल बदलाव भी हुए परंतु सभी परिस्थितियों को अपने अनुकूल करने में प्रभा ने स्वयं को सक्षम बना लिया था। प्रभा पढ़ने–लिखने में अच्छी थी उन्हें स्कूल के बाद कॉलेज में पढ़ने की इच्छा थी पर भाई ने फीस के पैसे देने से मना कर दिया तो प्रभा ने स्वयं ही अपनी फीस की व्यवस्था करने का निर्णय लिया और डॉ. साहब की

क्लीनिक में तीन सौ रुपये महीना तनख्वाह पर नौकरी कर ली। प्रभा ने अपने जीवन के अधिकतम निर्णय स्वयं ही किए क्योंकि प्रभा को किसी की पराधीनता स्वीकार नहीं थी। प्रभा ने कभी भी पूर्णतः पितृसत्तात्मक सत्ता को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनका कहना था कि ''स्त्री की अपनी अस्मिता, अपना अस्तित्व अपनी स्वयं की भी तो पहचान होती है, अतः स्त्री अपने फैसले स्वयं ले सकती है। समाज एवं परिवार दोनों ही जगह अपनी राय दे सकती है क्योंकि प्रभा की नजर में प्रगति किसी एक वर्ग या किसी एक व्यक्ति की नहीं होनी चाहिए न ही किसी वर्ग विशेष के लिए आन्दोलन आदि होने चाहिए।'' उनका स्पष्ट मत रहा है कि–

''ऐसे ढ़ेरों लोग हैं जो हमारे समृद्धि के दायरे में नहीं आते। हमारी प्रगति से दाई माँ, खेदरवा, हरिया बेचन और न जाने कितने लोग हैं उन्हें क्या मिला, वो तो वहीं के वहीं हैं।''

अतएव कुछ लोगों के सुख के लिए सम्पूर्ण समाज को अस्त–व्यस्त करना समाज की समस्या का हल नहीं है, संस्कृति और समय के साथ विचारों की कुंठा को परिवर्तित करना आवश्यक है तभी समाज उन्नति की ओर अग्रसर हो पाएगा।

प्रभा यह तो चाहती है कि ''घर, परिवार व समाज उन्नति करे परंतु उन्नति की होड़ में भारतीय संस्कृति की बली चढ़ जाए ऐसा वो कदापि नहीं चाहतीं। अर्थात् उन्नति तो करना है मगर अपना समाज अपनी संस्कृति के सम्मान के साथ। भारत–चीन युद्ध समय भी प्रभा ने अपने आधुनिक विचारों का परिचय दिया और अपने सारे गहने युद्ध के लिए सामग्री एकत्रित करने हेतु दान कर दिए, जहाँ स्त्रियाँ अपने घर वालों की इच्छा के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं बोलती थीं वहीं प्रभा ने बीस तोले गहने बिना किसी से पूछे ही दान कर दिया।

1962–63 के दौर में बंगाल में एवं समस्त भारत में ही आंतरिक अशांति भी छाई हुई थी साथ ही राष्ट्रीय अशांति का वातावरण भी व्याप्त था, जहाँ बाकी छात्र आन्दोलन, मार–पीट, तोड़–फोड़ आदि में संलग्न थें वहीं प्रभा अपने अस्तित्व की खोज में व्यस्त थीं। प्रभा कभी भी फर्स्ट क्लास के पीछे नहीं जाना चाहती थी वो बस अधिक ज्ञान अर्जन को ही महत्व देती थीं और उनकी इस ज्ञान पिपासा को तृप्त करने में उन्हीं के विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने उनकी सहायता की, उन्होंने प्रभा के मन में चल रहे द्वन्द्व को न सिर्फ समझा बल्कि शांत करने का प्रयास भी किया। प्रभा को ऐसी पुस्तकों की सूची बनाकर दी जो उनके मन में उठ रहे प्रश्नों को हल करने में सहायक थी। प्रभा का ज्ञान ही था जो उन्हें सही निणर्य लेने में सहायता करता था। प्रभा अपने बारे में लिखती है–

''मैंने अपनी जिंदगी का हर निर्णय खुद लिया है। हालांकि बहुतेरे निर्णय मेरे खिलाफ गए।'' अनुभूतियाँ और अनुभूतियों की परकथा लिखने वाली प्रभा खेतान एक नये चिंतन को आत्मसात करते हुए वैकल्पिक समाज के पृष्ठभूमि को सार्वजनिक किया। वो सच जो जनते और भोगते हुए कहने का साहस लोग

नहीं जुटा पाते, प्रभा जी ने बिना लाग–लपट अनुभूतियों को शब्द दिया। एक सामान्य मारवाड़ी मुहल्ले से निकलकर संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रतिनिधित्व करने वाली प्रभा खेतान नारी जागरण की मिशाल रही है। उन्होंने मानवीय पीड़ा, नारी दलन एवं उत्पीड़न की अनुभूति बड़ी गहराई से प्रस्तुत की है। परिवार की महत्वपूर्ण इकाई 'नारी' को बराबरी का अधिकार मिले, वो मानवीय संवेदना के, प्राप्त करे इस हेतु समाज को और अधिक उदात्त बनाने की कोशिश में वे लगातार संघर्षरत रहीं। उनका मानना है कि ''महिलाएं केवल धन कमाना या आजाद रहना नहीं चाहती वरन समाज के लिए कुछ करना भी चाहती हैं और इस भागीदारी में वो एक नए समाज की रूपरेखा तैयार करना चाहती हैं। जहाँ वह एक देह मात्र नहीं वरन एक संस्कृति भी है। उनका मसीहा कोई पुरुष नहीं बल्कि वो खुद है।

अपने प्रेम भाव को प्रभा जी ने सहज स्वीकार किया और अपने प्रेम की पूर्णता हेतु आवश्यक निर्णय लेने से वो कभी भी पीछे नहीं हटीं। उन्हें भली–भाँति पता था कि जिस प्रेम की आशा उन्होंने की है उसकी प्राप्ति हेतु उन्हें आजीवन अविवाहित ही रहना पड़ेगा और उन्होंने बड़ी दृढ़ता के साथ यह निश्चय किया और अपना सम्पूर्ण जीवन अविवाहित ही व्यतीत किया। ''डॉ. साहब की अविवाहित पत्नी बनकर'' प्रभा ने अपने जीवन के एक पक्ष में सदैव संघर्ष और मन को समझाकर कार्य किया परंतु वहीं प्रभा के जीवन का दूसरा पहलू, जहाँ उन्होंने असीम सफलता हासिल की, जिस मुकाम को चाहा उसे हासिल किया, समाज में अपनी स्वतंत्र छवि स्थापित की, स्वतंत्र, निडर समाज में प्रतिष्ठित, अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु सामर्थ्यवान स्त्री के रूप में स्वयं को स्थापित किया। व्यवसाय एवं साहित्य दोनों के शिखर पर आसीन हुई। परंतु इन सब के बावजूद प्रभा ने कभी भी अपनी जड़ों को विस्मृत नहीं किया उनका कहना था–

''मुझे देशी ही रहना है। हैम बर्गर के बदले रोटी सब्जी खानी है और यदि रोटी–सब्जी न मिले तो ब्रेड और उबले आलुओं से काम चला लूँगी पर अपनी पहचान मिटाकर अमेरिकन होने की जरूरत नहीं है।''

हर स्त्री को विद्रोही अवश्य होना चाहिए जो सही और गलत पर आवाज उठा सके, लोगों की परख करने की क्षमता होना अनिवार्य है। आईलिन अक्सर प्रभा को समझाती थी,– ''जानवर में आदमी और आदमी में जानकर पहचानों।'' सच है मानव और जानवर दोनों व्यक्ति मूलक नहीं प्रवर्ती मूलक हैं। मानव दुःख संघर्ष से मुक्ति कामना के विविधि आयाम ढूंढ़ता है। प्रभा खेतान भी अपने क्लेश और कष्ट के निवारण के लिए मानवोचित प्रयास करती हैं।

बचपन से ही भेदभाव का शिकार और उपेक्षा से ग्रस्त, साधारण शक्ल–सूरत और सामान्य बुद्धि की प्रभा परिवार की सुरक्षित चौहद्दी के भीतर ही यौन शोषण का शिकार भी हो जाती हैं, तदूपरांत प्रेम और भावनात्मक सुरक्षा की तलाश में उन तमाम आधातों से दो–चार होती हैं जिससे संभवतः हर स्त्री परिचित होती है।

अपने पूर्व संबंधों में जकड़ा हुआ प्रेमी, जो उन्हें पत्नी का स्थान नहीं दे पाता और सम्पूर्ण जीवन दूसरी स्त्री का दंश झेलते हुए भी प्रभा ने अपनी एक पहचान अर्जित की। मनुष्य के रूप में अपनी जिजीविषा और स्त्री के रूप में अपनी संवेदन शीलता को जीती हुई वो अपना स्वतंत्र व्यवसाय स्थापित करती है। घर के सीमित दायरे से स्वयं को मुक्त करके अपने सपनों को सुंदर क्षितिज तक विस्तृत करती हैं। भारत ही नहीं वरन विदेशों में भी अपने नाम का परचम लहराती है। समाज सेवा और साहित्य सेवा दोनों में ही उत्कृष्ठ स्थान हासिल करती हैं।

सामान्य से मारवाड़ी परिवार की प्रभा, जो प्रारंभ से एकांत से चुपचाप रहा करती थीं अपनी पीड़ा दाई माँ के अलावा पक्षियों आदि से कहती या स्वयं की समस्याओं का स्वयं ही मंथन करती और एकांत में रहने की वजह से गंभीर विचार करने का पर्याप्त समय भी होता था। समय के साथ प्रभा को समझ में आ गया था कि चुप रहने वालों का सदैव दमन ही होता है और अगर स्त्री को स्वतंत्र होना है अपने मन मुताबिक जीवन–यापन करना है तो आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना अवश्य है। अतः प्रभा ने व्यवसाय में मुकाम हासिल कर अपनी स्वतंत्रता सुनिश्चित की।

अपने मन के उदगार को अपनी कविताओं एवं अन्य कृतियों के माध्यम से व्यक्त किया। प्रभा आज के समाज में एक स्वतंत्र एवं शिक्षित नारी का उदाहरण स्वरूप है जो दूसरी स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनने हेतु प्रेरित करती हैं, चाहे जीवन में कितने ही उतार–चढ़ाव क्यों न आए परंतु बिना हार माने अथक प्रयास के लिए प्रेरित करती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः

[1].प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, 2007 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

[2].रेखा कुर्रे, समकालीन परिदृश्य और प्रभा खेतान के उपन्यास, हिन्दी बुक सेन्टर 2019 नई दिल्ली।

[3].प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री , राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003

[4].अरूण महेश्वरी, मासिक 'वागर्थ' (कोलकाता) नवम्बर, 2008

[5]. प्रभा खेतान, अपने–अपने चेहरे, 1996 किताबघर नई दिल्ली।

[6].प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता (1990) अनुाद, हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली

[7].डॉ. के. साईलता, 'शिंकजे का दर्द' में दलित जीवन